ISSN : 2583-2948

कई हाथ उठ्ठे

डिम्पी गोयल
वाइस प्रेसिडेंट, एच एस बी सी
हैदराबाद

मेरी बेगुनाही का मैं खुद ही चशमदीद
तोहमत लगाने को कई हाथ उठ्ठे
मरहम ज़ख्म पे न कोई लगाये
पत्थर उठाने को कई हाथ उठ्ठे

आँखों के आंसूं कोई भी पोंछे
फिर से रूलाने को कई हाथ उठ्ठे
मेरे गम से राहत कोई न दिलाये
समझाने बुझाने कई हाथ उठ्ठे

तोडा जो दम तब कोई भी नहीं था
मातम मनाने कई हाथ उठ्ठे
जिंदा को देने सहारा न आये
जनाजा उठाने को कई हाथ उठ्ठे

अस्मत बचाने कोई भी न आया
मुज़लिस सताने कई हाथ उठ्ठे
जलते घरों पे ,न पानी कोई डाले
पर हल्ला मचाने कई हाथ उठ्ठे

सीमा पे लड़ता नहीं कोई नेता
देश बचाने न कोई हाथ उठ्ठे
खाने की जब देश को बारी आई
तो पैसा कमाने कई हाथ उठ्ठे

ISSN : 2583-2948

डेमोक्रेसी बचे न बचे , क्या फ़िक्र है
सरकारें बचाने कई हाथ उठ्ठे
जनता मरे तो मरे , इनकी बला से
गठबंधन बनाने को कई हाथ उठे

रामायण की चौपाई ,कुरान-ए-आयात
दोनों का सम्बन्ध न कोई बताये
मगर दोनो में फरक कितना, बताने
पंडित मौलाने कई हाथ उठ्ठे

बीमारों को कौन संभालेगा बोलो
किसी भी बहाने न कोई हाथ उठ्ठे
दौलत के बटवारे का मामला था तो
अपने बेगाने कई हाथ उठ्ठे

कातिल को सज़ा, कौन दिलवाता यहाँ पे
सभी हाथ तो खून से ही सने थे
मगर इन्साफ की दुकानों के बाहर
नारे लगाने कई हाथ उठ्ठे!